चतुर्थ

आँकड़ो का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

शिक्षकों द्वारा एकत्रित आँकडो का विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थियों द्वारा एकत्रित आँकडो का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राचार्यों द्वारा एकत्रित जानकारियों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण

अभिभावकों से एकत्रित उपयोगी तथ्य

चतुर्थ अध्याय

आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

✸ प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षकों द्वारा (5 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के 25 शिक्षकों द्वारा) एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

तालिका क्रमांक 4.1

शिक्षकों की विद्यार्थियों से कक्षा में किये जाने वाले व्यवहार की अपेक्षा–

व्यवहार की अपेक्षा के बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. शांत	8	32%
2. अक्रिय	0	0%
3. सक्रिय	14	56%
4. संमत	3	12%
कुल	25	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि 56% शिक्षक चाहते हैं कि उनके विद्यार्थी सक्रिय रहें। 32% अपने विद्यार्थियों से शांत रहने की अपेक्षा करते हैं जबकि 12% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यार्थियों को संयत रहना चाहिये ।

तालिका क्रमांक 4.2

कक्षा–वातावरण का शिक्षक के लिए अनुकूल न होने का कारण –

कारण के बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. गृह कार्य करके न आना	13	52%
2. श्यामपट पर लिखते समय विद्यार्थियों द्वारा व्यवधान	6	24%
3. अध्ययन में रुचि न लेना	4	16%
4. असंबद्ध बातों को कक्षा में उठाना	2	8%
कुल	25	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि 52% शिक्षकों द्वारा कक्षा वातावरण अपने अनुकूल न होने का करण विद्यार्थियों द्वारा गृह कार्य करके न आना, माना जाता है । 24% शिक्षकों का मानना है कि श्यामपट पर लिखते समय विद्यार्थियों द्वारा व्यवधान उत्पन्न किया जाता है । 16% शिक्षक इसका कारण विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन में रूचि न लेना मानते हैं जबकि 2% शिक्षक मानते हैं कि विद्यार्थियों द्वारा असंबद्ध बातों को कक्षा में उठाना, कक्षा वातावरण के अनुकूल न होने का एक प्रमुख कारण है ।

तालिका कमांक 4.3

शिक्षक की प्रतिक्रिया –

प्रतिक्रिया संबंधी बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. कक्षा को छोड़ देना	3	12%
2. उत्पन्न समस्या को अपने तरीके से टेकल करना	12	48%
3. नजर अंदाज करना	2	8%
4. उच्च अधिकारियों/माता–पिता से शिकायत करना	8	32%
कुल	25	100%

यह तालिका प्रदर्शित कर रही है कि जब शिक्षक कक्षा का वातावरण अपने अनुकूल नहीं पाते हैं तो 12% शिक्षक कक्षा छोड़ देते है, 48% उत्पन्न समस्या को अपने तरीके से टेकल करते है, 8% नजर अंदाज कर देते हैं जबकि 32% शिक्षक अपने उच्च अधिकारियों एवं माता–पिता से शिकायत करते हैं ।

तालिका क्रमांक 4.4

गृह–कार्य देने के प्रति शिक्षक का उद्देश्य –

उद्देश्य संबंधी बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. बेहत्तर अधिगम सुनिश्चित करना	9	36%
2. पढ़ायी गयी विषय–वस्तु का अभ्यास कराना	11	44%
3. विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व उत्पन्न कराना	3	12%
4. व्यस्त रखना	2	8%
कुल	25	100%

यह तालिका इन पक्षों को उजागर करती है कि 36% शिक्षकों का गृह कार्य देने के प्रति उद्देश्य बेहतर अधिगम सुनिश्चित करना है । 44% शिक्षकों का उद्देश्य पढ़ायी गयी विषय–वस्तु का अभ्यास कराना है, 12% शिक्षक, विद्यार्थियों में कार्य करने के प्रति उत्तरदायित्व उत्पन्न कराना चाहते हैं जबकि 8% शिक्षकों का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यस्त रखना होता है ।

तालिका क्रमांक 4.5

गृह–कार्य को जमा करने पर शिक्षक का कार्य –

कार्य बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. शीघ्र जाँच कर लौटाना	7	28%
2. गृह कार्य पर चर्चा	6	24%
3. असमर्थ बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण	5	20%
4. विद्यार्थियों से ही गृह कार्य की जाँच	7	28%
कुल	25	100%

इस तालिका से यह दृष्टिगोचर होता है कि विद्यार्थियों द्वारा गृह कार्य जमा करने पर 28% शिक्षक शीघ्र जाँच कर विद्यार्थियों को लौटाते हैं, 24% शिक्षक पूरे गृह–कार्य पर चर्चा करते हैं, 20% शिक्षक गृह–कार्य करने में असमर्थ बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करते हैं तथा 28% शिक्षक, विद्यार्थियों से ही उनके गृह–कार्य की जाँच करवाते हैं ।

तालिका क्रमांक 4.6

गृह–कार्य के मूल्यांकन विषयक चर्चा –

मूल्याकंन विषयक चर्चा के बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. Feed back में विलंब होना	6	24%
2. प्राप्तांकों से संतुष्ट न होना	8	32%
3. मूल्याकंन में भेदभाव को इंगित करना	6	24%
4. मूल्याकंन के प्रति खुली सोच	5	20%
कुल	25	100%

यह तालिका दर्शाती है कि शिक्षक गृह–कार्य के मूल्यांकन के संदर्भ में मानते है कि 24% मामलों में Feed back में विलंब एक मुख्य बिंदु माना जाता है, 32% मामलों में बच्चे अपने प्राप्तांकों से संतुष्ट नहीं होते, 24% मामलों में बच्चों द्वारा मूल्याकंन में हुये भेदभाव को इंगित किया जाता है जबकि 20% मामलों में शिक्षक द्वारा किये गये मूल्यांकन के प्रति खुली सोच रखी जाती है।

तालिका क्रमांक 4.7

शिक्षक –छात्रों का अनुपात –

शिक्षक–छात्रों का अनुपात	आवृत्ति	प्रतिशत
1. 1 : 40	8	32%
2. 1 : 50	13	52%
3. 1 : 60	4	16%
4. 1 : 60 से अधिक	0	0%
कुल	25	100%

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के अनुसार कक्षा में शिक्षक–छात्रों का अनुपात इस प्रकार होना चाहिये– 32% शिक्षक 1:40 के समर्थक हैं, 52% शिक्षकों के अनुसार यह अनुपात 1:50 होना चाहिये, 16% शिक्षक 1:60 को आदर्श अनुपात मानते हैं वहीं प्रत्येक शिक्षक का यह मानना है कि यह अनुपात 1:60 से अधिक कभी नहीं होना चाहिये ।

तालिका क्रमांक 4.8

विद्यार्थियों की अधिक संख्या से होने वाली दिक्कतें –

दिक्कतें	आवृत्ति	प्रतिशत
1. विषय–वस्तु को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत न कर पाना	9	36%
2. विद्यार्थियों को नियंत्रित नहीं कर पाना	3	12%
3. विषय–वस्तु से संबंधित उचित प्रविधि का उपयोग नहीं कर पाना	7	28%
4. विषय–वस्तु को समय–सीमा में पूरा नहीं कर पाना	6	24%
कुल	25	100%

यह तालिका दर्शाती है कि 36% शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या के कारण विषय-वस्तु को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत नहीं कर पाते, 12% शिक्षक विद्यार्थियों को नियंत्रित नहीं कर पाते, 28% शिक्षक विषय-वस्तु से संबंधित उचित प्रविधि का उपयोग नहीं कर पाते जबकि 24% शिक्षक विषय-वस्तु को समय-सीमा में पूरा नहीं कर पाते ।

तालिका कमांक 4.9

शिक्षक द्वारा बड़ी कक्षा के कारण उत्पन्न समस्याओं का निराकरण -

समस्याओं का निराकरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1. अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया को छात्र नेताओं की सहायता से पूरा करना	11	44%
2. पठन पाठन में नवाचार का प्रयोग करना	4	16%
3. विषय-वस्तु को कम कर देना	6	24%
4. गृह-कार्य दे देना	4	16%
कुल	25	100%

इस तालिका को देखने से स्पष्ट है कि बडी कक्षा के कारण उत्पन्न समस्याओं का शिक्षकों द्वारा निराकरण के संदर्भ में, 44% शिक्षक अध्ययन -अध्यापन प्रक्रिया को छात्र नेताओं की सहायता से पूरा कराते हैं, 16% शिक्षक पठन-पाठन में नवाचार का प्रयोग करते हैं, 24% शिक्षक विषय-वस्तु को कम कर देते हैं जबकि 16% शिक्षक गृह-कार्य देकर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं ।

तालिका कमांक 4.10

कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें –

कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें	आवृत्ति	प्रतिशत
1. विद्यार्थियों का विषय–वस्तु के प्रति उदासीन रहना	3	12%
2. कक्षा में उदण्डतापूर्ण व्यवहार करना	17	68%
3. शिक्षक के विषय में अवांछित टिप्पणी करना	2	8%
4. उपरोक्त सभी	3	12%
कुल	25	100%

यह तालिका कक्षा में शिक्षकों के समक्ष आने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं को उजागर करती है। 12% शिक्षकों के समक्ष यह समस्या आती है कि उनके विद्यार्थी विषय–वस्तु के प्रति उदासीन रहते हैं, 68% शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में उदण्डतापूर्वक व्यवहार किया जाता है, 8% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक के विषय में अवांछित टिप्पणी की जाती है जबकि 12% शिक्षकों का मानना है कि उपरोक्त सभी प्रकार की अनुशासन संबंधी समस्याओं का उन्हें सामना करना पड़ता है ।

तालिका कमांक 4.11

शिक्षक की दृष्टि में विद्यार्थियों के अनुशासित रहने के कारण –

अनुशासित रहने के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1. प्राचार्य का सख्त होना	7	28%
2. विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षक–गतिविधि के प्रति जुड़ाव महसूस करना	6	24%
3. विद्यार्थियों को नियमित एवं समयबद्ध संचालन द्वारा व्यस्त रखना	9	36%
4. निर्धारित विद्यालयीन कैलेण्डर का समुचित पालन करना	3	12%
कुल	25	100%

यह तालिका दर्शाती है कि शिक्षकों के अनुसार उनके विद्यालय में विद्यार्थियों के अनुशासित रहने के प्रमुख कारणों में, 28% शिक्षक, उनके प्राचार्य का सख्त होना मानते हैं, 24% शिक्षक मानते हैं कि उनके विद्यालय के शिक्षकों द्वारा शिक्षक–गतिविधि के प्रति जुड़ाव महसूस किया जाता है, 36% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यार्थियों को नियमित एवं समयबद्ध संचालन द्वारा व्यस्त रखा जाता है जबकि 12% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यालय में निर्धारित विद्यालयीन कैलेण्डर का समुचित पालन किया जाता है जिसके कारण उनके विद्यालय के विद्यार्थी अनुशासित रहते हैं ।

✸ **विद्यार्थियों द्वारा एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा (5 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों द्वारा) एकत्रित आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका कमांक 4.12

विद्यार्थियों की कक्षा में बैठने के पश्चात् मनः स्थिति –

मनः स्थिति के बिंदु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. प्रसन्न	34	34%
2. अप्रसन्न	48	48%
3. उदासीन	18	18%
कुल	100	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि 34% विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन के दौरान प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। 48% अप्रसन्न रहते हैं जबकि 18% उदासीन रहते हैं। प्रसन्न विद्यार्थी जहां सक्रिय और अनुशासित रहते हैं वहीं अप्रसन्न विद्यार्थी अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण बनते हैं ।

तालिका क्रमांक 4.13

कक्षा में अशांति की अधिकता –

अशांति कब अधिक होती है	आवृत्ति	प्रतिशत
1. शिक्षक द्वारा हाजिरी लेते समय	19	19%
2. शिक्षक द्वारा श्यामपट पर कुछ लिखते समय	23	23%
3. शिक्षक द्वारा शैक्षिक अभ्यास प्रदान करने के बाद	58	58%
कुल	100	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि 19% विद्यार्थियों का मानना है कि जब शिक्षक हाजिरी लेते हैं तो कक्षा में अशांतिपूर्व वातावरण होता है। 23% विद्यार्थी मानते हैं कि कक्षा में अशांति की अधिकता तब होती है जब शिक्षक श्यामपट पर विषय–वस्तु को लिखते हैं जबकि 58% विद्यार्थी, शिक्षक द्वारा शैक्षिक अभ्यास प्रदान करने के बाद अशांति की अधिकता को स्वीकार करते है।

तालिका क्रमांक 1.14

विद्यार्थियों के माता–पिता का शैक्षिक स्तर –

शैक्षिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1. निरक्षर	41	41%
2. पाँचवीं तक	16	16%
3. आठवीं तक	12	12%
4. दसवीं तक	11	11%
5. बारहवीं तक	8	8%
6. स्नातक	7	7%
7. स्नातकोत्तर	5	5%
कुल	100	100%

यहाँ स्पष्ट है कि 41% माता-पिता निरक्षर है। 16% पाँचवीं तक, 12% आठवीं तक, 11% दसवीं तक, 8% बारहवीं तक शिक्षित है। वहीं 7% स्नातक तथा 5% स्नातकोत्तर हैं । घर के शैक्षिक वातावरण को श्रेष्ठता प्रदान करने में माता-पिता के शैक्षिक स्तर की विशेष भूमिका रहती है ।

तालिका क्रमांक 4.15

विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह-कार्य की उपयोगिता –

गृह-कार्य उपयोगी है	आवृत्ति	प्रतिशत
1. हाँ	64	64%
2. नहीं	36	36%
कुल	100	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि जहाँ 64% विद्यार्थी गृह-कार्य को उपयोगी मानते हैं वहीं 36% विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह-कार्य की कोई उपयोगिता नहीं हैं। गृह-कार्य करने में अनियमितता का होना अनुशासन संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण बनता है ।

तालिका क्रमांक 4.16

विद्यार्थी द्वारा गृह-कार्य नहीं करने के कारण –

गृह-कार्य नहीं करने के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1. शिक्षक का शिक्षण समझ नहीं आना	57	57%
2. माता-पिता द्वारा घर के काम में लगा देना	22	22%
3. माता-पिता द्वारा गृह-कार्य के संबंध में कभी नहीं पूछने के कारण उसके प्रति लापरवाह होना	21	21%
कुल	100	100%

प्रस्तुत तालिका इस बात को प्रतिबिंबित करती है कि 57% विद्यार्थी इसलिये गृह-कार्य नहीं करते क्योंकि उन्हें शिक्षक का शिक्षण समझ नहीं आता है। 22% विद्यार्थी इसका कारण माता-पिता द्वारा घर के कामों में लगा देना मानते हैं जबकि 21% विद्यार्थी गृह-कार्य के प्रति इसलिये लापरवाह रहते है क्योंकि माता-पिता द्वारा गृह-कार्य के संबंध में उनसे किसी तरह की जानकारी नहीं ली जाती ।

तालिका क्रमांक 4.17

अध्यापन समझ नहीं आने पर विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक से पूछना –

गृह-कार्य उपयोगी है	आवृत्ति	प्रतिशत
1. हाँ	46	46%
2. नहीं	54	54%
कुल	100	100%

यह तालिका दर्शाती है कि यदि किसी शिक्षक का अध्यापन विद्यार्थियों को समझ नहीं आ रहा है तो 46% विद्यार्थी, शिक्षक से पूछते हैं जबकि 54% विद्यार्थी, शिक्षक से अपनी समस्या का निदान नहीं करते ।

तालिका क्रमांक 4.18

विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक से न पूछने के कारण –

कारण बिन्दु	आवृत्ति	प्रतिशत
1. पूछने पर कक्षा के अन्य बच्चों का हँसना	38	38%
2. पूछने पर शिक्षक द्वारा डांटना	41	41%
3. अन्य कारण	21	21%
कुल	100	100%

इस तालिका से यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि यदि शिक्षक का अध्यापन किसी विद्यार्थी को समझ नहीं आ रहा हो तब भी विद्यार्थियों द्वारा नहीं पूछने का कारण 38% विद्यार्थियों द्वारा सहपाठियों का हँसना, 41% विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक द्वारा डांटना तथा 21% विद्यार्थियों द्वारा कुछ अन्य कारण बताये गये, जैसे अध्ययन में रूचि न होना, अपेक्षा के अनुसार विद्यार्थी को अंक नहीं दिया जाना, शिक्षक द्वारा विद्यार्थी पर अविश्वास आदि ।

तालिका क्रमांक 4.19

अध्यापन समझ नहीं आने के बाद विद्यार्थियों की मनःस्थिति –

क्या आपका मन कक्षा में लगता है	आवृत्ति	प्रतिशत
1. हाँ	22	22%
2. नहीं	59	59%
3. और कोई विकल्प नहीं है	19	19%
कुल	100	100%

यह तालिका इन पक्षों को उजागर करती है कि कक्षा में अध्यापन समझ नहीं आ रहा हो तो 59% विद्यार्थियों का मानना है कि उनका मन कक्षा में नहीं लगता है। 22% विद्यार्थियों का मन फिर भी कक्षा में लगता है जबकि 19% विद्यार्थियों का मानना है कि और कोई विकल्प उनके पास नहीं है ।

तालिका क्रमांक 4.20

शिक्षक द्वारा गृह-कार्य का मूल्यांकन –

गृह-कार्य को शिक्षक सही तरह से देखते हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
1. हाँ	43	43%
2. नहीं	57	57%
कुल	100	100%

यह तालिका उद्घोषित करती है कि 43% विद्यार्थियों का मानना है कि उनका गृह–कार्य शिक्षक द्वारा सही तरह से जाँचा जाता है जबकि 57% विद्यार्थियों का मानना है कि शिक्षक द्वारा उनके गृह–कार्य का सही तरह से मूल्यांकन नहीं किया जाता ।

तालिका कमांक 4.21

विद्यार्थियों के साथ शिक्षक के व्यवहार की एकरूपता –

शिक्षक का व्यवहार एक जैसा होता है	आवृत्ति	प्रतिशत
1. हाँ	47	47%
2. नहीं	53	53%
कुल	100	100%

यह तालिका प्रदर्शित करती है कि 47% विद्यार्थियों का मानना है कि हर विद्यार्थी के साथ शिक्षक का व्यवहार एक जैसा होता है जबकि 53% विद्यार्थी शिक्षक के व्यवहार में एकरूपता नहीं पाते हैं ।

तालिका कमांक 4.22

शिक्षक की अपेक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों द्वारा अनुशासित नहीं रहने के कारण –

अनुशासित नहीं रहने के कारण	आवृत्ति	प्रतिशात
1. शिक्षक में नियंत्रण क्षमता की कमी	16	16%
2. विद्यार्थियों की उदण्डता से अनुशासन का भंग होना	41	41%
3. शिाक्षण का तरीका सही नहीं लगना	36	36%
4. विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक की गुणवत्ता पर अविश्वास	7	7%
कुल	100	100%

इस तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षक की अपेक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों द्वारा अनुशासित नहीं रहने के कारण, विद्यार्थियों के अनुसार इस प्रकार हैं, 16% विद्यार्थी इसके लिये शिक्षक के नियंत्रण क्षमता की कमी को उत्तरदायी मानते हैं, 41% विद्यार्थी का मानना है कि विद्यार्थियों की उदण्डता से अनुशासन भंग होता है, 36% विद्यार्थी इसका कारण शिक्षक का तरीका सही नहीं लगना मानते है जबकि 7% विद्यार्थी इसका कारण शिक्षक की गुणवत्ता पर अवि वास को मानते है ।

क्रमांक 4.23

प्राचार्यो (पांच विद्यालयों के प्राचार्य) द्वारा साक्षात्कार-अनुसूची के माध्यम से एकत्रित जानकारियों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण-

पांच विद्यालयों में से एक विद्यालय की स्थापना को 100 वर्ष हो चुके हैं। दो विद्यालयों को स्थापित हुये 10 वर्ष से अधिक हो गये हैं। चौथे विद्यालयों को 4 वर्ष तथा पाँचवें विद्यालय को 3 वर्ष हो गया है ।

100 वर्ष पूर्व कर चुके विद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों में छात्रों का मेरिट से उत्तीर्ण होना, खेलकूद की प्रतियोगिताओं में अच्छा स्थान पाना, विज्ञान मेले में सहभागिता, शिक्षकों द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार पाना आदि है। बाकी विद्यालयों में बहुत कम छात्र मेरिट से उत्तीर्ण हुये हैं तथा अन्य कार्यो में भी छात्रों की सहभागिता कम है । उनके प्राचार्यो से इसका कारण पूछने पर विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन को गंभीरता से न लेना, शैक्षिक पृष्ठभूमि का अच्छा न होना (माता-पिता की अशिक्षा), गृह-कार्य को पूरा करके न आना, कक्षा का बड़ा आकार, शिक्षकों की अपर्याप्तता आदि बताया गया ।

लगभग सभी विद्यालयों के प्राचार्यो का मानना है कि संचालन संबंधी विभिन्न कार्यो में शिक्षकों का सहयोग मिलता है फिर भी शिक्षकों की संख्या पर्याप्त नहीं होने से कभी-कभी कक्षा अध्यापन में व्यवधान उत्पन्न होता है फलस्वरूप अनुशासन संबंधी समस्या उत्पन्न होती है ।

तीन विद्यालयों के प्राचार्यो (60%)का मानना है कि विद्यालय के नियमित संचालन में विद्यार्थियों की ओर से भी कुछ समस्याओं का सामना करना पडता

है। जैसे गृह-कार्य की अनियमितता, अध्ययन के प्रति गंभीर न होना, विद्यालय के समय समाप्ति के पूर्व भाग जाना, शिक्षक की एकाग्रता भंग करना आदि ।

विद्यार्थियों से संबंधित समस्यायें जानने का तरीका से संबंधित पक्षों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि लगभग तीन विद्यालय के प्राचार्य कक्षा शिक्षक से पूछते हैं, एक विद्यालय के प्राचार्य कक्षा के चलते समय विद्यालय में धूम कर पर्यवेक्षण करते हैं। एक विद्यालय के प्राचार्य समय-समय पर विद्यार्थियों से मिलकर चर्चा करते हैं और उनसे संबंधित समस्याओं को जानते है ।

विद्यार्थियों द्वारा उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के संबंध में विश्लेषण से पता चला कि दो विद्यालय के प्राचार्य तो संबंधित पक्षों से विस्तार पूर्वक चर्चा के पश्चात् सही हल खोजते हैं। दो विद्यालय के प्राचार्य विद्यार्थियों के माता-पिता को भी बुलाकर उनको भी वस्तु-स्थिति से अवगत कराते हैं जबकि एक विद्यालय के प्राचार्य मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुये कार्यवाही करते हैं यदि मामला गंभीर न हुआ तो उसे नजर अंदाज भी कर देते हैं ।

क्रमांक 4.24

अभिभावकों (माता-पिता) से समूह-चर्चा के पश्चात् उपयोगी तथ्य -

विद्यार्थियों द्वारा गृह कार्य करके विद्यालय न जाने के प्रति एक मुख्य कारण माता-पिता द्वारा शिक्षित न होना है अधिकांशतः अशिक्षित माता-पिता का मानना है कि उनको पता नहीं रहता है कि उनका बच्चा गृह-कार्य करके विद्यालय जा रहा है या नहीं । तीन अभिभावकों (20%) का कहना है कि उनका बच्चा ज्यादात्तर तो यही कहता है कि उसे गृह-कार्य नहीं दिया गया है ।

गृह-कार्य नहीं किये जाने का कारण लगभग 10 माता-पिता बताते हैं कि उनका बच्चा सही ढंग से विषय-वस्तु को समझ नहीं पाता है इसलिये गृह-कार्य नहीं कर पाता है तीन माता-पिता मानते हैं कि उनके बच्चे की अध्ययन में रुचि नहीं है जबकि दो माता-पिता उनके आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने को इसका कारण मानते हैं। इसकी वजह से उन्हें बच्चों से भी काम करवाने पड़ते हैं । फलतः वे अपना गृह-कार्य पूर्ण नहीं कर पाते ।

लगभग 6 माता–पिता ने स्वीकार किया कि वे अपने बच्चों को बताते हैं कि कक्षा में शांत बैठकर अध्ययन में रूचि रखें। 4 माता–पिता का मानना है कि बच्चें हैं तो शोर करेंगें, खेलेगें। पाँच माता–पिता मानते हैं कि उन्होंनें इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया ।

घर का शैक्षिक वातावरण भी बच्चों को बहुत अधिक प्रभावित करता है । लगभग आधे से अधिक माता–पिता का मानना है कि उनके बच्चे अब माध्यमिक विद्यालय में पढ़ते हैं इसलिये अब उन्हें स्वयं अपने अध्ययन के प्रति ध्यान देना आ गया है अतः माता–पिता को ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। तीन माता–पिता का मानना है कि उन्हें अपने बच्चों से बराबर चर्चा करना जरूरी है कि उनका अध्ययन कैसा चल रहा हैं, कक्षा में उन्हें कोई समस्या तो नहीं है । पाँच माता–पिता का मानना है कि अशिक्षित होने के कारण वे बच्चों की स्थिति से अनभिज्ञ हैं ।

विद्यार्थियों की अनुशासन संबंधी समस्याओं के संदर्भ में लगभग 08 माता–पिता ये मानने को तैयार नही है कि उनका बच्चा अनुशासनहीनता करता होगा। 4 माता–पिता बच्चों की संगति को इसके लिये दोषी मानते हैं। 3 माता–पिता इसके लिये प्रमुख कारण शिक्षकों की असमर्थता को मानते हैं।

कक्षा को अनुशासित रखने हेतु शिक्षक द्वारा अपनाये गये उपायों के प्रति अधिकांश माता–पिता का यह दृष्टिकोण है कि कई बार शिक्षक अपना उत्तरदायित्व ठीक तरह से निभा नहीं पाते है और दोष विद्यार्थियों पर लगा दिया जाता है। 5 माता–पिता मानते हैं कि अनुशासित रखने हेतु विद्यार्थियों पर नियंत्रण आवश्यक है।

शोध प्रश्नों का संग्रहित प्रदत्तों के आधार पर परीक्षण

RQ-1 **क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता है?**

तालिका कमांक 4.25

गृह कार्य में अनियमितता–कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण

कमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	52% शिक्षकों द्वारा कक्षा–वातावरण अपने अनुकूल न होने का कारण विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करके न आना
2.	प्रश्नावली	विद्यार्थियों द्वारा	36% विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह–कार्य की कोई उपयोगिता नहीं है
3.	साक्षात्कार–अनुसूची	प्राचार्यो द्वारा	60% प्राचार्यो का मानना है कि विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में की जाने वाली अनियमितता के कारण विद्यालय के नियमित संचालन में समस्या आती है
4.	समूह–चर्चा	अभिभावकों द्वारा	20% माता–पिता ने बताया है कि उसे गृह–कार्य नहीं दिया गया है और वह गृह–कार्य करके विद्यालय नहीं जाता

(तालिका क्रमांक 4.2, 4.15, 4.23, 4.24 से साभार)

ऑकडों के विश्लेषण से यहाँ यह बात स्पष्ट हो रही है कि विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता है जिसके कारण शिक्षकों द्वारा कक्षा–वातावरण अपने प्रतिकूल माना जा रहा है, प्राचार्यो द्वारा विद्यालय के नियमित संचालन में आने वाली बाधाओं को चिन्हित किया जा रहा है। माता–पिता भी स्वीकार कर रहे है कि उनका बच्चा गृह–कार्य बिना किये ही विद्यालय जाता है। वहीं लगभग एक तिहाई विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह–कार्य की कोई उपयोगिता नहीं है। ऐसे विद्यार्थी ही कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं की उत्तपत्ति का कारण बनते हैं अतः विभिन्न स्त्रों से मिली जानकारी के आधार पर यहाँ यह स्वीकार किया जा सकता है कि कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता है।

RQ-2

क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं गृह-कार्य की गुणवत्ता से संबंधित हैं ?

तालिका कमांक 4.26

गृह कार्य की गुणवत्ता-कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण

कमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	36% शिक्षक मानते है कि गृह-कार्य देने के प्रति उनका उद्देश्य बेहतर अधिगम सुनिश्चित करता है
			44% शिक्षक गृह-कार्य के माध्यम से पढ़ायी गयी विषय-वस्तु का अभ्यास कराना चाहते हैं
			12% शिक्षक, विद्याथ्रियों में कार्य करने के प्रति उत्तरदायित्व उत्पन्न कराना चाहते हैं
			8% शिक्षकों का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यस्त रखना होता है।

(तालिका क्रमांक 4.4 से साभार)

ऑकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पढ़ायी गयी विषय-वस्तु से संबंधित दिया गया गृह-कार्य गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तम होता है। गृह-कार्य की गुणवत्ता को लेकर कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं की उत्पत्ति का कोई आधार अध्ययन में प्राप्त नहीं हुआ। अतः यह माना जा सकता है कि कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें गृह-कार्य की गुणवत्ता से संबंधित नहीं होती हैं।

RQ-3

क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण दिये गये गृह-कार्य के मूल्यांकन में पारदर्शिता से संबंधित हैं ?

तालिका क्रमांक 4.27

गृह कार्य के मूल्यांकन में पादर्शिता–अनुशासन संबंधी समस्या का कारण

क्रमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	28% शिक्षक, विद्यार्थियों से ही गृह–कार्य की जांच करवाते हैं। 24% मामलों मे **Feed Backa** में विलंब होता है, 32% विद्यार्थी प्राप्तांकों से असंतुष्ट हैं, 24% विद्यार्थी मूल्यांकन में भेदभाव को इंगित करते हैं
2.	प्रश्नावली	विद्यार्थियों द्वारा	57% विद्यार्थियों का मानना है कि शिक्षक द्वारा उनके गृह–कार्य का सही तरह से मूल्यांकन नहीं किया जाता
3.	साक्षात्कार–अनुसूची	प्राचार्यो द्वारा	लगभग सभी प्राचार्यो का मानना है कि, शिक्षकों द्वारा गृह–कार्य का त्वरित और सही मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता की जाने लगेगी और अनुशासन संबंधी समस्याओं की उत्पत्ति होने लगेगी

(तालिका क्रमांक 4.5, 4.6, 4.20 तथा 4.23 से साभार)

ऑकडों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जहां शिक्षक , विद्याथियों से ही उनके गृह–कार्य की जांच करवाते हैं वहां विद्यार्थी गृह–कार्य को करने के लिये गंभीरता से प्रतिबद्ध नहीं होते। इसी तरह यदि विद्यार्थी अपने प्राप्तांकों से असंतुष्ट हैं, मूल्यांकन में भेदभाव को इंगित करते हैं, यह मानते हैं कि शिक्षक द्वारा उनके गृह–कार्य का सही तरीके से मूल्यांकन नहीं किया जाता है तो ये सभी बातें अनुशासनहीनता को बढ़ाने के लिये पर्याप्त हैं। प्राचार्यो ने भी माना है कि गृह–कार्य के त्वरित और सही मूल्यांकन के बिना अनुशासन संबंधी समस्याओं की उत्पत्ति होती है। अतः इन जानकारियों के आधार पर यह स्वीकार किया जा

सकता है कि अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण दिये गये गृह-कार्य के मूल्यांकन में पारदर्शिता से संबंधित है।

RQ-4

क्या कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण बनती है ?

RQ-5

क्या कक्षा में छात्रों अधिक संख्या कक्षा-प्रबंधन में व्यवधान उत्पन्न करती है ?

तालिका क्रमांक 4.28

छात्र संख्या की अधिकता-कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन संबंधी समस्या का कारण

क्रमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	1. 32% शिक्षक कक्षा में शिक्षक-छात्रों का अनुपात 1:40 को सही मानते है 52% शिक्षक 1:50 को आदर्श अनुपात मानते है। 16% शिक्षक 1:60 तक को सही मानते है। 1:60 से अधिक के अनुपात को किसी भी शिक्षक ने सही नहीं माना है। 2. 36% शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या के कारण विषय-वस्तु को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत नहीं कर पाते। 12% शिक्षक, विद्यार्थियों को नियंत्रित नहीं कर पाते। 28% शिक्षक विषय-वस्तु से संबंधित उचित प्रविधि का उपयोग नहीं कर पाते। 24% शिक्षक विषय-वस्तु को समय-सीमा में पूरा नहीं कर पाते
2.	साक्षात्कार-अनुसूची	प्राचार्यो द्वारा	सभी प्राचार्यो ने छात्रों की अधिक संख्या को कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन संबंधी समस्या का कारण माना है।

(तालिका क्रमांक 4.7, 4.8 एवं 4.23 से सभार)

यहां **RQ-4** तथा **RQ-5** दोनों से संबंधित आँकड़ों का संयुक्त रूप से विश्लेषण किया जा रहा है। आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अधिक संख्या कक्षा–वातावरण को शिक्षकों के प्रतिकूल बनाती है फलतः शिक्षक शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन व्यवस्थित रूप से नहीं कर पाते इससे जहां कक्षा–प्रबंधन में व्यवधान होता है वहीं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अनुशासन संबंधी समस्यायें उत्पन्न होती हैं। जैसे– विद्यार्थी शांत नहीं रहते, पिछले बैंचों के विद्यार्थी अक्रिय हो जाते हैं, विद्यार्थी अध्ययन के प्रति गंभीर नहीं रहते, गृह–कार्य संबंधी अनियमितता की जाने लगती है, विद्यार्थियों द्वारा असंबद्ध बातों को कक्षा में उठाया जाने लगता है आदि। अतः यह स्वीकार किया जा सकता है कि कक्षा में विद्यार्थियों की अधिक संख्या, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण बनती है और कक्षा–प्रबंधन में व्यवधान उत्पन्न करती है।

RQ-6

क्या कक्षा में छात्रों की अधिकता से उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं का निराकरण शिक्षक द्वारा किया जा सकता है?

RQ-7

क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं को शिक्षक अपने शिक्षण–कौशल से नियंत्रित कर सकता है ?

तालिका कमांक 4.29

कक्षा में उत्पन्न समस्याओं का शिक्षकों द्वारा निराकरण

कमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	1. 44% शिक्षक कक्षा में छात्रों की अधिकता से उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं के निराकरण हेतु अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया को छात्र–नेताओं की सहायता से पूरा करते हैं। छात्र–नेता उत्पन्न होने वाली

			अनुशासन संबंधी समस्याओं को नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करते हैं। 2. 16% शिक्षक पठन-पाठन में नवाचार का प्रयोग करते हैं जैसे छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करके पाठ के विभिन्न भागों को तैयार कराना फिर-हर समूह द्वारा दूसरे समूह को समझाना, अलग-अलग शैक्षिक गतिविधियों को आयोजित कराना, करके -सीखने की अवधारणा का उपयोग करना आदि। 3. 24% शिक्षक विषय-वस्तु को कम कर देते हैं। 16% शिक्षक गृह-कार्य दे कर व्यस्त रखते हैं

(तालिका क्रमांक 4.9 से साभार)

यहां **RQ-6** तथा **RQ-7** दोनों से संबंधित आँकड़ों का संयुक्त रूप से विश्लेषण किया जा रहा है। यहाँ स्पष्ट है कि शिक्षक की कक्षा में छात्रों की अधिकता की समस्या भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले देश के लिये एक सामान्य बात है। शिक्षक को ही अपने में ऐसे शिक्षण-कौशल विकसित करने होंगे ताकि छात्रों की अधिकता से उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं का निराकरण शिक्षक द्वारा किया जा सके। यहां प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट है कि छात्र-नेताओं की सहायता लेना, नवाचारों का प्रयोग, विषय-वस्तु को कम कर देना, गृह-कार्य दे देना आदि विभिन्न शिक्षण-कौशल ही हैं जिनकी सहायता से कक्षा में अनुशासन

संबंधी समस्याओं का निराकरण शिक्षक द्वारा किया जा रहा है और साथ ही इन्हीं शिक्षण–कौशल की ही सहायता से उन्हें नियंत्रित भी किया जा रहा है।

RQ-8

कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं में छात्रों की शैक्षिक–पृष्ठभूमि का किस सीमा तक योगदान है ?

तालिका क्रमांक 4.30

छात्रों की शैक्षिक पृष्ठभूमि–कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण

क.	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	68% शिक्षकों का कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं के संदर्भ में मानना है कि विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में उदण्डतापूर्ण व्यवहार किया जाता है, 8% शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक के विषय में अवांछित टिप्पणी की जाती है
2.	प्रश्नावली	विद्यार्थियों द्वारा	1. विद्यार्थियों के माता–पिता में से 41% माता–पिता निरक्षर हैं। 2. 36% विद्यार्थियों की दृष्टि में गृह–कार्य की कोई उपयोगिता नहीं है। 3. 21% विद्यार्थी, माता–पिता द्वारा गृह–कार्य के संबंध में कमी नहीं पूछने के कारण उसके प्रति लापरवाह पाये गये। 4. 41% विद्यार्थियों का मानना है कि विद्यार्थियों की उदण्डता से अनुशासनभंग होता है।
4.	समूह–चर्चा	अभिभावकों द्वारा	माता–पिता से समूह–चर्चा के पश्चात् यह जानकारी मिली कि अधिकांश अशिक्षित माता–पिता का मानना है कि उनको पता नहीं रहता है कि उनका बच्चा गृह–कार्य करके विद्यालय जा रहा है या नहीं

(तालिक क्रमांक4.10,4.14,4.15,4.16,4.22,4.24 से साभार)

इन आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों के माता-पिता निरक्षर है उनकी शैक्षिक-पृष्ठभूमि कमजोर होती है ऐसे माता-पिता अपने बच्चों के अध्ययन के प्रति ध्यान नहीं दे पाते बच्चों से उनके विद्यालय एवं कक्षा के संदर्भ में कोई जानकारी नहीं लेते फलतः बच्चें लापरवाह हो जाते हैं, वे गृह-कार्य किये बिना ही विद्यालय जाते हैं, अपनी उदण्डता से अनुशासन भंग करते हैं, शिक्षक के विषय में अवांछित टिप्पणी करते हैं। माता-पिता द्वारा अनभिज्ञता के कारण बच्चों को कक्षा में सही तरीके से अध्ययन करने के लिये प्रेरित नहीं किया जाता, गुरू-शिष्य संबंधों की गरिमा का भान नहीं कराया जाता। इसके फलस्वरूप कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का जन्म होता है। अतः यह स्वीकार किया जा सकता है कि कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं में छात्रों की शैक्षिक-पृष्ठभूमि का बहुत अधिक योगदान है।

RQ-9

क्या विद्यालयीन प्रशासन कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति सजग है ?

तालिका कमांक 4.31

विद्यालयीन प्रशासन का कक्षा को अनुशासित रखने संबंधी प्रयास

कमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
1.	प्रश्नावली	शिक्षकों द्वारा	1. 28% शिक्षक मानते हैं कि विद्यार्थी अनुशासित रहते हैं क्योंकि उनके प्राचार्य सख्त हैं। 2. 24% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यालय के शिक्षकों द्वारा शिक्षक-गतिविधि के प्रति जुड़ाव महसूस किया जाता है। 3. 36% शिक्षकों का मानना है कि उनके विद्यार्थियों को नियमित एवं समयबद्ध संचालन द्वारा व्यस्त रखा जाता है। 12% शिक्षक मानते हैं कि उनके विद्यालय में निर्धारित विद्यालयीन कैलेण्डर का समूचित पालन किया जाता है जिसके कारण उनके विद्यालय के विद्यार्थी अनुशासित रहते हैं।

(तालिका क्रमांक 4.11 से साभार)

आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं को रोकने के लिये प्राचार्य एवं शिक्षकों का सहयोग है तथा विद्यार्थियों को नियमित एवं समयबद्ध संचालन द्वारा व्यस्त रखा जाता है, तथा निर्धारित विद्यालयनी कलेण्डर का समुचित पालन किया जाता है। अतः यह स्वीकार किया जा सकता है कि विद्यालयीन प्रशासन कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति सजग है।

RQ-10

विद्यालयीन प्रशासन का कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन समस्याओं के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

तालिका क्रमांक 4.32

विद्यालयीन प्रशासन का अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण

क्रमांक	स्त्रोत	प्रतिउत्तर	विवरण
2.	साक्षात्कार–अनुसूची	प्राचार्यो द्वारा	1. लगभग सभी विद्यालयों के प्राचार्यो ने स्वीकार किया है कि कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के पीछे विद्यार्थियों की शैक्षिक–पृष्ठभूमि का अच्छा न होना, अध्ययन को गंभीरता से न लेना, कक्षा का बड़ा आकार, शिक्षकों की अपर्याप्तता आदि कारण हैं। 2. संचालन संबंधी विभिन्न कार्यो में शिक्षकों का सहयोग लिया जाता है। 3. विद्यार्थियों से संबंधित समस्याएं जानने के तरीके से संबंधित पक्षों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि लगभग

			तीन विद्यालय के प्राचार्य कक्षा-शिक्षक से पूछते हैं, एक विद्यालय में घूम-घूम कर पर्यवेक्षण करते हैं, एक विद्यालय के प्राचार्य, विद्यार्थियों से चर्चा करके संबंधित समस्याओं को जानते हैं। 4. विद्यार्थियों द्वारा उत्पन्न समस्याओं के संदर्भ में दो विद्यालय के प्राचार्य तो संबंधित पक्षों से विस्तापूर्वक चर्चा के पश्चात् सही हल खोजते हैं। दो विद्यालय के प्राचार्य, विद्यार्थियों के माता-पिता को भी बुलाकर वे वस्तु स्थिति से अवगत कराते हैं जबकि एक विद्यालय के प्रचार्य मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुये कार्यवाही करते हैं।

(तालिका क्रमांक 4.23 से साभार)

यहाँ आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विद्यालयीन प्रशासन कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण और निदान खोजने में तत्पर रहता है इसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों के माता-पिता का भी सहयोग लिया जाता है। प्राचार्यो द्वारा भी इन समस्याओं को रोकने हेतु पर्यवेक्षण किया जाता है। इस प्रकार यह स्वीकार किया जा सकता है कि विद्यालयीन प्रशासन कक्षा मे उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण और निदान जानकर उन पर यथासंभव अंकुश लगाता है।